# सम्पन्न बनने की रात्रि, नवरात्रि

**आने वाला समय कुछ दिन में उन वरदानी हस्तों को सबके सामने लाने वाला है, जिसकी एक झलक मात्र से ही सबके दुःख दूर हो जाते हैं। इन देवियों के लिए ही चिरातीत से भारत के लोग आश्विन मास की शुक्ल प्रतिपदा से लेकर नवमी तक नवरात्रि का त्योहार भक्ति भावना और उत्साह से मनाते चले आ रहे हैं। इस त्योहार के प्रारंभ में ही लोग कलश की स्थापना करते हैं और अखण्ड दीप जगाते हैं जो लगातार नौ दिन और रात जगता रहता है।**

जिस तरह से कोई कार्य अभी-अभी शुरू करके उसे कुछ दिन में पूरा कर दें तो कार्य की सिद्धि होगी क्या? नहीं ना। तो क्या सिर्फ नौ दिन अखण्ड दीपक जगाने से हमारी भावनाएं हमेशा के लिए पूरी हो सकती हैं? इसलिए हम इसके थोड़ा विस्तार में चलते हैं कि नवरात्रि के त्योहार की शुरुआत के प्रसंग क्या कहते हैं ... इस विषय में जानकारी के लिए नवरात्रि से सम्बन्धित एक प्रसंग, जिसको कथा रूप में भक्त जन सविस्तार सुना करते हैं, सहायक सिद्ध हो सकता है। एक आख्यान में यह कहा गया है कि पिछली चतुर्युगी के अंतिम चरण में जब विश्व विनाश के निकट था, तब 'मधु और कैटभ' नामक असुरों ने देवी-देवताओं को अपना बन्दी बनाया हुआ था और तब श्री नारायण भी मोह निद्रा में सोये हुए थे। तब ब्रह्मा जी के द्वारा आदि कन्या प्रकट हुई। उसने नारायण को जगाया और उन्होंने मधु-कैटभ का नाश कर देवी-देवताओं को मुक्त कराया।

अब देखा जाये तो वास्तव में इस आख्यान में रूपक अलंकार के द्वारा विश्व के एक बहुत ही महत्वपूर्ण वृत्तान्त का वर्णन किया गया है। परंतु लोग प्रायः इसका शब्दार्थ ही ले लेते हैं जिससे वे सत्य बोध से वंचित रह जाते हैं। वास्तव में किसी एक या किन्हीं दो असुरों द्वारा सभी देवी-देवताओं के परास्त होने की बात शब्दार्थ में तो किसी के गले के नीचे उतरना भी मुश्किल है।

पिछली चतुर्युगी के अंत में जब विनाश काल निकट था और सृष्टि पर अज्ञान तथा तमोगुण रूपी रात्रि छाई हुई थी, तब राग(मधु)और द्वेष(कैटभ) ने उन सभी नर-नारियों को जो कि सतयुग में दिव्यता सम्पन्न होने से देवी देवता थे, परंतु धीरे-धीरे अपवित्रता की ओर अग्रसर होते आये थे, अपना बन्दी बना रखा था। यहाँ तक कि सतयुग के आरंभ में जो देव शिरोमणि श्री नारायण थे, अब वे भी जन्म-जन्मान्तर के बाद मोह निद्रा में विलीन थे। ऐसी धर्म ग्लानि के समय परमपिता शिव ने त्रिदेव के द्वारा भारत की कन्याओं को ज्ञान, योग तथा दिव्य गुण रूपी शक्ति से सुसज्जित किया। यह ज्ञान ही उनका तीसरा नेत्र था और अंतर्मुखता, सहनशीलता आदि दिव्य शक्तियाँ ही उनकी अष्ट भुजायें थीं। इन्हीं शक्तियों के कारण वे आदि शक्ति अथवा शिव शक्ति कहलायीं।

### शक्तियों का गायन वंदन रात्रि को क्यों?

रात्रि में ही शक्तियों के गायन वंदन की जो परम्परा है अथवा रात्रि को ही जागरण, स्मरण इत्यादि की जो परिपाटी चली आती है, उसके पीछे भी एक महत्वपूर्ण इतिहास छिपा हुआ है। वास्तव में 'रात्रि' शब्द उस रात्रि का वाचक नहीं है जो चौबीस घंटे में एक बार आती है, बल्कि यह उस 'रात्रि' का बोधक है जो 'शिवरात्रि' के नाम से भी प्रसिद्ध है। लाक्षणिक दृष्टि से सतयुग और त्रेतायुग को ब्रह्मा का दिन कहना चाहिए क्योंकि उस काल में जन जीवन प्रकाशमय होता है, अज्ञान अंधकार से आवृत्त नहीं होता और विकारों की कालिमा से भी आच्छादित नहीं होता, बल्कि सतोगुणी होता है और 'सत्' नाम प्रकाश का है। द्वापर और कलियुग को 'ब्रह्मा की रात्रि' कहना उचित है, क्योंकि उन दो युगों में मनुष्य अज्ञानांधकार में होते हैं और तमोगुणी होते हैं और तमोगुण नाम अंधकार का है।

ऐसी अज्ञान रात्रि के समय परमपिता परमात्मा ज्योतिर्लिंगम शिव एक मध्यम वर्ग के मनुष्य के वृद्ध तन में अवतरित(प्रविष्ट) होते हैं और उसके दैहिक जन्म के समय का नाम बदल कर अब उसका कर्त्तव्य वाचक नाम "प्रजापिता ब्रह्मा" रखते हैं। उसके मुखारविन्द द्वारा जो नर-नारियाँ ज्ञान सुनकर और अपने जीवन को परिवर्तित करके नया आध्यात्मिक जन्म पाते हैं, वे ही सच्चे अर्थ में 'ब्राह्मण-ब्राह्मणियाँ' हैं। उन्हीं ब्रह्मचर्य व्रत धारिणी कन्याओं-माताओं को 'शिव-शक्तियाँ' कहते हैं, क्योंकि वे ब्रह्मा द्वारा परमात्मा शिव से ज्ञान-शक्ति, योग-शक्ति और पवित्रता-शक्ति प्राप्त करती हैं। अतः उस 'रात्रि' की याद में तथा उन शक्तियों की स्मृति में आज भी लोग रात्रि को ही शक्तियों का गुण -गान करते और नवरात्रि का त्योहार मनाते हैं।

## मन का होना ही अशांति का कारण

दुनिया में तीन तरह के अशांत लोग मिल जाएंगे। आप उनमें से एक हो सकते हैं। पहले अशांत को दुर्जन का नाम दिया जा सकता है। दुर्जन वह व्यक्ति है जो भीतर से भी अशांत है तो बाहर से भी। दूसरी श्रेणी में सज्जन लोग आते हैं। ये भीतर से थोड़े गड़बड़, लेकिन बाहर से ठीक-ठाक होते हैं। इनके भीतर अशांति अंगड़ाई ले रही होती है, पर चूंकि सज्जन हैं, इसलिए जैसे-तैसे उसे संभाल लेते हैं। ऐसे लोग शांत होने का अभिनय करने में इतने दक्ष हो जाते हैं कि असली शांति क्या होती है, भूल जाते हैं। तीसरी श्रेणी के लोग हैं संत, जो कि भीतर-बाहर दोनों से शांत होते हैं। केवल शरीर से संत एक आवरण हो सकता है, लेकिन संत बनने के लिए मन पर काम करना पड़ता है। हमारी अशांति का केन्द्र मन है। यदि मन हटा दो, तो शांति अपने आप आ जायेगी। अगर कोई कहे कि मेरा मन अशांत है, तो ऊपरी तौर पर बात समझ में आयेगी, पर गहराई में यह है कि अशांत मन होता नहीं है। दरअसल, जीवन में जब अशांति आती है तो उस अशांति का नाम मन है। मन अपने आप में कोई चीज़ नहीं है। अशांति इकट्ठी होकर कोई आकार ले ले तो उसे मन कहेंगे। अशांति गई तो मन गया। थोड़ा सा बुद्धि को जागरुक रखिए, समझ में आ जाएगा कि किन बिंदुओं से आप अशांत होते हैं, फिर आप उनसे जुड़ना ही बंद कर देंगे। जैसे ही अशांति के कारण हटाए, मन अपने आप गायब हो जाएगा। जिसका मन उपस्थित है, वह भीतर-बाहर दोनों से अशांत है।

# दशहरा या दस+हारा

**राम ने रावण पर जो विजय प्राप्त की, उसकी याद में एक पर्व मनाया जाता है, जिसे हम दशहरा कहते हैं। लेकिन वह विजय कौन सी थी? क्या वह शस्त्र-बल की थी या शारीरिक बल की विजय थी? इस घटना को इतने सालों से हम सुनते आये हैं, लेकिन अभी तक भी असमंजस की स्थिति है कि यादगार तो है, लेकिन इस यादगार का जुड़ाव कहाँ से है? इस तथ्य को समझने के लिए आज कुछ साक्ष्यों पर विचार करते हैं...**

राम-रावण की लड़ाई कलियुग की मानसिक दशा का वर्णन है। आज ये मनोदशा घर घर में है। राम ने तो रावण को कब का मार दिया था, लेकिन आज भी हम उसको जलाते हैं। देखा जाये तो बुत सदा दुश्मन का ही जलाया जाता है। अब प्रश्न उठता है कि यह रावण शत्रु कौन है और इसे हर वर्ष क्यों जलाते हैं? साधारण रीति से यदि किसी से पूछा जाये कि रावण कौन था तो यही उत्तर मिलता है कि वह लंका का राजा था जो इतना शक्तिशाली था कि उसने जल, अग्नि, वायु तथा काल को अपने पलंग के पांवों से बांध रखा था। उसे दशानन अर्थात् दस सिर वाला कहते हैं। परन्तु क्या यह बात सत्य हो सकती है कि किसी व्यक्ति के दस सिर हों? ऐसा व्यक्ति भला सोता कैसे होगा? यदि रावण सचमुच दस सिर वाला था, तब तो आज भी उसके वंश का कोई व्यक्ति दस सिर ना सही, तो चार-पाँच सिर वाला तो दिखाई देना ही चाहिए था। वास्तव में रावण किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं है, ना ही दस सिर वाला कोई मनुष्य होता है। रावण माया का प्रतीक है और इसके दस सिर माया के काम, क्रोध आदि पाँच विकारों की नर में और इन्हीं पाँच विकारों की नारी में प्रवेशता के सूचक हैं। यदि रावण कोई सचमुच का राजा विशेष होता तो उसे एक बार जलाने से ही काम पूरा हो जाता, परंतु यह माया का ही अलंकारिक प्रतीक है, इसलिए इसे हर वर्ष जलाते रहते हैं, जब तक कि यह रावण सचमुच न जल जाये। दशहरा अथवा 'दस+हरा' का अर्थ है नर-नारी के दस विकारों को हरना। सच्चा दशहरा तभी होता है जब रामेश्वर परमात्मा पतित मनुष्यात्माओं को पुनः पावन अर्थात् निर्विकारी बनाकर सच्चे राम-राज्य की पुनर्स्थापना करते हैं। दशहरा को विजय-दशमी भी कहते हैं। विजय-दशमी का भी भावार्थ है दस पर विजय पाना। मनुष्य पाँच ज्ञानेन्द्रियों और पाँच कर्मेन्द्रियों, इन दस इन्द्रियों के द्वारा विकारों के वशीभूत होकर ही विकर्म करता है। अतः विकारों पर विजय पाना ही विजय दशमी है।

### राम के दो स्वरूप

वास्तव में राम के दो स्वरूप हमारे सम्मुख आते हैं। राम का प्रथम स्वरूप निराकार परमपिता परमात्मा का है। दूसरे, त्रेतायुग के दैवी गुणधारी राजा राम हैं जो शरीरधारी हैं और मनुष्य रूप में देवता हैं तथा मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। निराकार राम अध्यात्म-विद्या के ईश्वर अथवा प्रभु हैं। वे ही परम कल्याणकारी रूप में भगवान शिव हैं। ऐसी कथा है कि शिव भगवान जब अपनी शक्तियों सहित संसार में अवतरित होते हैं तब वे असुरों का, आसुरी राज्य और विकारी एवं हीन समाज का अंत करके विश्व को नवीन और अविकारी बना देते हैं और देवी देवताओं का राज्य तथा दैवी समाज की स्थापना कर देते हैं। सृष्टि को विकारी से निर्विकारी, पुरानी से नयी और तमोप्रधान दुःखी से सतोप्रधान सुखी बनाने का परम कल्याणमय अनुपम कार्य सम्पन्न करने के कारण ही भारत में परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ नाम 'शिव' गाया गया है। शिव का शब्दार्थ ही होता है कल्याण अर्थात् 'कल्याणकारी'।

### योग बल ही वास्तविक और सर्वोत्तम बल

विजयदशमी के पर्व की श्री राम की विजय अथवा दुर्गा-पूजा के पर्व की शिव शक्तियों की विजय की वास्तविकता क्या है? जैसा कि परमपिता परमात्मा शिव ने कल्प पूर्ववत् वर्तमान संगमयुग में प्रजापिता ब्रह्मा के श्रीमुख से हमें स्पष्ट किया है कि विजयदशमी वा दशहरा तथा दुर्गा पूजा की दोनों कथायें मूलतः एक ही हैं। एक ही निराकार राम ने कलियुग के अंत और सतयुग की आदि के संगम (संगमयुग)पर कलियुगी रावण राज्य को समाप्त कर सतयुगी राम राज्य की स्थापना के लिए भारत भूमि में दिव्य अलौकिक अवतार धारण किया। पुराणों में जिनका गायन है वे ब्रह्मा ही महावीर हैं जिन्होंने माया रूपी रावण के पाँच विकारों - काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ पर योगबल द्वारा विजय का अपने जीवन में आदर्श रखा और इस प्रकार इसका पथ प्रशस्त किया। और ब्रह्मा-वत्स ही शिव शक्तियाँ हैं अथवा परमात्मा राम की सीतायें व रूहानी सेना हैं जो परमात्मा के सहज गीता ज्ञान तथा राजयोग-बल द्वारा जीवन में विकारों पर पूर्ण विजय प्राप्त करने में तत्पर अथवा संघर्ष रत हैं।